वर्तमानकालीन अध्यापक शिक्षा के सशक्त पहलू व उसके समक्ष चुनौतियाँ

डॉ. प्रवीन शर्मा
प्राचार्य
शहीद भगत सिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन
औढां रोड़ कालांवाली, सिरसा

प्राचीन काल में भारत शिक्षा का सर्वोच्च केन्द्र रहा है। तक्षशिला, नालंदा आदि ऐसे स्थान थे जहां पर भारत के विभिन्न राज्यों से ही नहीं वरन् विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इसका कारण भारत की शिक्षा व्यवस्था का उत्कृष्ट व शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न अंगों का सुव्यवस्थित होना था। यद्यपि प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की तरह अध्यापक प्रशिक्षण का कोई विधिवत् विधान नहीं था। परंतु इसका तात्पर्य यह भी नहीं है कि कोई भी व्यक्ति अध्यापन कार्य कर सकता था। केवल वही व्यक्ति अध्यापक बनता था या उसे ही शिक्षा देने का अधिकार दिया जाता था जिसे अपने विषय पर पूरा अधिकार हो तथा जो चारित्रिक व स्वभाव से ही शिक्षक होता था। उस समय अध्यापक को तैयार या प्रशिक्षित नहीं किया जाता था। इसका आशय यह है कि वह अपने जीवन के अनुभवों से सीख कर ही अध्यापक बनता था और अपने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के अनुभवों से ही वह वास्वितक प्रशिक्षण प्राप्त करता था। उस समय अध्यापन का कार्य वही व्यक्ति करता था जिसके मन में बचपन से ही अध्यापक बनने की या शिक्षा देने की इच्छा होती थी। या ऐसा कहा जाए कि वह अध्यापक बनने के लिए ही पैदा हुआ है।

किसी भी देश का भविष्य उस देश के अध्यापकों के हाथ में होता है क्योंकि किसी भी देश का भविष्य उस देश के बच्चे होते हैं और इन बच्चों या विद्यार्थियों का सही आकार देने का कार्य एक शिक्षक का ही होता है। अगर यह शिक्षक सही ढंग से प्रशिक्षित होगा तभी देश के भावी भविष्य का निर्माण कर पाएगा। कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से उपर नहीं उठ सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कहा गया है कि किसी भी समाज की संस्कृतिक व सामाजिक दृष्टि का पता उस समाज में अध्यापकों के स्तर से पता चलता है। अध्यापक किसी भी शैक्षिक व्यवस्था की धूरी है। अतः अध्यापकों के निर्माण के लिए उचित अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता से पहले व स्वतंत्रता के पश्चात् अध्यापक शिक्षा को सही ढंग से लागू करने व उसे बेहतर बनाने के लिए अनेकों प्रयास हुए हैं। परंतु इतने प्रयासों के बाद व अनेक आयोगों की सिफारिशों के बाद भी अध्यापक शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है।

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। किसी भी देश के बच्चों की स्थिति व विकास को देख कर उस देश के वर्तमान तथा उसके भविष्य की कल्पना कर सकते हैं। ऐसी ही दृष्टिकोण रखते हुए कोठारी कमीशन ने कहा है कि देश का भविष्य कक्षा–कक्ष में आकार ले रहा है। देश के इस भविष्य को आकार देने का कार्य शिक्षक का है। यदि शिक्षक स्वयं सुशिक्षित व प्रशिक्षित है तो वह देश के भविष्य को सही आकार दे पाएगा अन्यथा वही उसे विकृत कर देगा। इस प्रकार देखें तो बच्चे देश का भविष्य है और इस भविष्य का निर्माणकर्त्ता शिक्षक है। शिक्षक के महत्वपूर्ण स्थान को देखते हुए

विभिन्न आयोगों, समितियों ने शिक्षक के प्रशिक्षण पर बल दिया। योग्य व कुशल अध्यापकों को निर्माण के लिए ही अध्यापक–शिक्षा का प्रावधान किया गया, जिसे शिक्षण–महाविद्यालयों द्वारा दिया जाता है। वर्तमान अध्यापक शिक्षा के सशक्त पहलू इस प्रकार है।

समाज व देश के दर्शन का ज्ञान : – अध्यापक शिक्षा में विद्यार्थियों को देश व समाज के विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का ज्ञान करवाया जाता है। अध्यापक को अपना कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वह जिस समाज व देश में बच्चों को शिक्षा दे रहा है उसका दर्शन कैसा है। क्योंकि किसी देश के समाज का दर्शन ही वहां के लोगों के जीवन के उद्देश्यों व उनकी आवश्यकताओं को निर्धारित करता है और जीवन के उद्देश्यों ओर आवश्यकताओं की प्राप्ती शिक्षा से ही होती है। जब अध्यापक समाज की विभिन्न विचारधाराओं से परिचित होता है तो शिक्षा द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को अधिक कुशलता के साथ प्राप्त कर सकता है।

विद्यार्थियों के मनोविज्ञान का ज्ञान :– अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में मनोविज्ञान का भी ज्ञान अध्यापकों को करवाया जाता है। मनोविज्ञान में बालकों के विकास, उनकी समस्याओं, सीखने के नियम, प्रेरणा आदि के बारे में बताया जाता है। मनोविज्ञान के इन पक्षों के ज्ञान के कारण, अध्यापक विद्यार्थियों को अच्छी तरह समझता है व उनकी समस्याओं को जानते हुए अधिगम में आने वाली बाधाओं को हटा कर विद्यार्थियों के मनोविज्ञान के अनुसार ही शिक्षण विधि का चुनाव करता है। इस प्रकार वह अपने कार्य को अधिक कुशलतापूर्वक करता है।

अध्यापक को शिक्षण में कुशल बनाना :– अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम के दौरान अध्यापक को शिक्षण में कुशलता प्राप्त कराने के उद्देश्य से विभिन्न शिक्षण विधियों के ज्ञान करवाया जाता है। इसके लिए छात्र–अध्यापकों द्वारा कक्षा में शिक्षण अभ्यास जिसे सूक्ष्म शिक्षण कहा जाता है व विद्यालयों में भी बच्चों को शिक्षण का अभ्यास करवाया जाता है। छात्र–अध्यापक विभिन्न शिक्षण विधियों के अभ्यास के द्वारा अपने शिक्षण कार्य को कुशल बना सकता है।

अनुदेशात्मक सामग्री का ज्ञान :– अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के एक भाग में विद्यार्थियों को अनुदेशात्मक सामग्री अर्थात जिस सामग्री का प्रयोग वह शिक्षण के दौरान कर सकता है, का ज्ञान दिया जाता है। अनुदेशात्मक सामग्री के प्रयोग से अध्यापक अपने अध्यापन को रूचिपूर्ण, प्रभावशाली बना सकता है।

पाठ्यक्रम परीक्षा व मूल्यांकन संबंधित सिद्धान्तों का ज्ञान :– अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत अध्यापकों को पाठ्यक्रम, परीक्षा व मूल्यांकन संबंधित सिद्धान्तों व विधियों, तकनीकों आदि से परिचित करवाया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप वह भी इस योग्य होता है कि वह विद्यार्थियों की आयु, योग्यता, रूचि व परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम, परीक्षाओं के प्रकार व मूल्यांकन की विधियों को स्वयं विकसित कर सकता है या उनका क्रियान्वन अच्छे ढंग से कर सकता है।

अध्यापक कार्य से संबंधित विभिन्न योग्यताओं का विकास :– अध्यापन में कुशलता प्राप्त करने के लिए अध्यापक को कुशल वक्ता, श्यामपट्ट लेखन व चित्रांकन में निपुण होना चाहिए। अध्यापकों को अध्यापक–शिक्षा के दौरान इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है जिसके द्वारा वह अपने अध्यापन को प्रभावशाली बनाता है।

विद्यालय प्रबंधन का ज्ञान :– अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्यापकों को विद्यालय प्रबंध के विभिन्न पक्षों का ज्ञान दिया जाता है। जैसे – समय–सारणी व उसकी रचना, विभिन्न प्रकार के रजिस्टरों व रिकार्डों और उनके रख–रखाव, पुरूस्कार व दण्ड की व्यवस्था, विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कायक्रमों का आयोजन व उनकी महत्वता आदि। इस प्रकार की जानकारी के द्वारा

अध्यापक न केवल अध्यापन का कार्य ही कुशलता से करता है बल्कि विद्यालय प्रबंध के विभिन्न पक्षों को व्यवस्थित रखने में भी सक्रिय भूमिका अदा कर सकता है।

विभिन्न सामाजिक समस्याओं का ज्ञान :– एक शिक्षक ही समाज को बदलने की योग्यता रखता है। अध्यापक शिक्षा पाठ्क्रम के अंर्तगत अध्यापकों को विभिन्न प्रकार के प्रकोष्ठ जैसे महिला प्रकोष्ठ, ECO Club, Red Riben Club आदि के माध्यम से विभिन्न समस्याओं की जानकारी तथा उन्हें सुलझाने के बारे में प्रोत्साहित किया जाता है। इससे अध्यापक को न केवल अध्यापन कार्य में ही सहायता मिलती है बल्कि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

उपर्युक्त अध्यापक शिक्षा के सशक्त पक्षों के अतिरिक्त अध्यापक शिक्षा के समक्ष विभिन्न चुनौतियां है। जो इस प्रकार है।–

अध्यापक शिक्षा में रूचि का अभाव :– वर्तमान में अध्यापक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र अध्यापकों में रूचि का अभाव है। अध्यापक शिक्षा में प्रवेश के लिए किसी भी आयु के महिला–पुरूष इसमें प्रवेश ले सकते हैं। इसके कारण विद्यार्थी–जीवन निकल जाने के पश्चात् भी महिला–पुरूष इस कार्यक्रम में प्रवेश ले लेते हैं। ऐसे छात्र–अध्यापकों पर अपने घर–परिवार की जिम्मेदारी होती है। विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियों के चलते वह इसमें रूचि नहीं ले पाते। इस कार्यक्रम को केवल खाना–पूर्ति ही बनाकर रख दिया जाता है। वर्तमान में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

अध्यापक शिक्षा के प्रति आकर्षण का अभाव :– वर्तमान में छात्रों का अध्यापक शिक्षा के प्रतिआकर्षण कम हो रहा है। क्योंकि इसे पूरा करने के पश्चात सरकारी क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं बहुत कम हैं तथा निजि क्षेत्र में अध्यापन कार्य के लिए वेतन बहुत कम दिया जाता है। निजि संस्थाओं में अध्यापकों का शोषण हो रहा है तथा उन्हें नाममात्र की ही सुविधाएं मिलती हैं।

अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम शुल्कः में वृद्धि :– वर्तमान में सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सीटों की संख्या बहुत कम है। अधिकांश छात्रों को निजि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश हेतू जाना पड़ता है। परन्तु निजि महाविद्यालयों में शुल्क बहुत अधिक है जो कि सामान्य व गरीब विद्यालयों के लिए देना मुश्किल हो जाता है। इस कारण योग्य होते हुए भी वह इसमें प्रवेश नहीं ले पाते हैं तथा ऐसे विद्यार्थी जिनको अध्यापन में रूचि नहीं ऐसे लोगों को प्रवेश मिल जाता है।

योग्य अध्यापकों का अभाव :– वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में योग्य व प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव है। जिसके कारण अध्यापक शिक्षा का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है।

निजि महाविद्यालयों में बढ़ता भ्रष्टाचार :– अधिकांश निजि महाविद्यालयों में योग्य व उचित मात्रा में स्टाफ नहीं रखा जाता है क्योंकि इसके लिए उन्हें अधिक वेतन देना होता है। इससे बचने के लिए वह कागजी स्टाफ रखते हैं और अध्यापन के लिए अयोग्य व कम वेतन के अध्यापकों की नियुक्ति करते हैं। जिनको पूरा ज्ञान नहीं होता है। इसके अतिरिक्त कुछ निजि महाविद्यालयों में छात्र–अध्यापकों को कक्षा में न बैठने की सुविधा भी दी जाती है। इसके लिए लिए उनसे अतिरिक्त शुल्क वसूला जाता है। इस शुल्क को देने के पश्चात् छात्र–अध्यापकों घर में ही बैठ कर पढ़ाई करते हैं। ऐसे छात्र–अध्यापकों के कारण अध्यापन शिक्षा का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है जो चिन्ता का विषय है और यह अध्यापक शिक्षा के सुधार के रास्ते में बहुत बड़ी बाधा है।

प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भौतिक व अन्य सुविधाएं :– अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विभिन्न प्रकार की प्रयोगशालाएं, वैज्ञानिक उपकरण उन्नत पुस्तकालय का होना आवश्यक है। परन्तु अधिकांश महाविद्यालयों में

अध्यापक शिक्ष से संबधिंत इन सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है। इस कारण ऐसे महाविद्यालय एक योग्य व कुशल अध्यापक बनाने में विफल रहते हैं। ऐसे अध्यापकों में व्यवहारिक ज्ञान की भी कमी होती है।

विभिन्न प्रकार की अनुदेशानात्मक सामग्री व उपकरणों का अभाव :– अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम में भावी अध्यापकों को विभिन्न शिक्षण विधियों से परिचित करवाया जाता है। ताकि अध्यापक देश–काल व परिस्थिति के अनुसार अपनी शिक्षण विधि का चुनाव कर सके। इसके लिए कुछ आधुनिक उपकरणों की आवश्यकता होती है। जैसे स्लाईड प्रोजैक्टर, एपिडायस्कोप, ओवरहैड प्रोजेक्टर आदि। ये उपकरण महंगे होते हैं इसलिए अधिकांश निजि महाविद्यालय उन्हें नहीं खरीदते। इस कारण छात्राध्यापाकों को इनसे शिक्षण का प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है।

विद्यार्थियों की घटती संख्या :– वर्तमान में शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में उपलब्ध सीटों को भरना भी एक समस्या है। क्योंकि क्षेत्रिय विद्यार्थियों की संख्या कम है। सीटों को भरने के लिए महाविद्यालय अन्य राज्यों के विद्यार्थियों को प्रवेश देने के लिए नये–नये हथकण्डे अपनाता है, विद्यार्थियों को प्रलोभन देता है। विद्यार्थियों को इस तरह आकर्षित करने में वह अध्यापक–शिक्षा के लिए विभिन्न जरूरी नियमों की अवहेलना कर देता है। जो कि अध्यापक शिक्षा के स्तर को नीचे की तरफ ले जाता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जाता है कि अध्यापक शिक्षा निःसंदेह भावी अध्यापकों के लिए उपयोगी है। इसे ग्रहण कर वे अधिक कुशलता के साथ अपना अध्यापन कार्य कर सकते हैं। परन्तु बढ़ते भ्रष्टाचार, गिरते नैतिक मूल्यों ने अध्यापक–शिक्षा के औचित्य पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। इस कार्यक्रम के लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए कुछ उपाय आवश्यक हैं जो इस प्रकार हैं :–

- अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश देने की विधियों को सुधारा जाए तथा रूचि व योग्यता को आकार बना कर प्रवेश दिया जाए। अध्यापन विषय में रूचि को जानने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षा ली जाए ताकि अध्यापन में रूचि लेने वाले ही अध्यापक शिक्षा में प्रवेश ले सकें।
- प्रायः देखने में आता है कि अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में छात्र अध्यापकों को कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है। छात्र–अध्यापकों को विचाराभिव्यक्ति के अवसर बहुत कम मिलते हैं। इसलिए प्रशिक्षण काल के दौरान उन्हें नये–नये विचार, नये–नये प्रशिक्षण करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए।
- प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अधिकांश व्याख्यान विधि द्वारा ही अध्यापन करवाया जाता है। इस विधि के अतिरिक्त विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रसार भाषणों, पुस्तकालय पाठनों, दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा अध्यापन का कार्य किया जाना चाहिए।
- छात्र–अध्यापकों को अपने विषय में निपुणता लाने के लिए प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अनुसंधान के लिए पुस्तकालय व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।
- प्रशिक्षण महाविद्यालयों में उचित व योग्य स्टाफ व सभी सुविधाएं उपलब्ध करवानी चाहिए।
- निजि महाविद्यालयों में हो रहें भ्रष्टाचार पर लगाम लगे, इसके लिए सशक्त कानून बनाए जाने चाहिए।
- अध्यापक शिक्षा का पाठ्क्रम को व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा से संबंधित विभिन्न समस्याओं को दूर कर उसके सशक्त पक्ष को सुदृढ़ किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- कपूर, बीना एंड पाण्डेय, (1998). शिक्षा के दार्शनिक आधारः आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- भटटाचार्य डा.जी..सी (2012). अध्यापक शिक्षाः श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
- पाठक पी.डी. (2012). भारतीय समाज में शिक्षा व शिक्षक। विनोद पुस्तक मन्दिर, नई दिल्ली।
- वालिया. जे.एस. (2012). शिक्षा के दार्शनिक आधार, पाल पब्लिकेशन, जालंधर।
- सिंह.एन.पी (2003). शिक्षा के दार्शनिक आधार, मेरठः आर.लाल बुक डिपो।